The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

मानव सभ्यता की रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास

डॉ0 सुमित कुमार

राजनीति विज्ञान विभाग
एस0डी0 (पी0जी0) कॉलेज, मुजफ्फरनगर

सारांश–

मानव ने अपने विकास की अभिव्यक्ति को सर्वप्रथम आग के अविष्कार के रूप में एक आमूलचूल परिवर्तन दिया, जिसके कारण भोजन की गुणवत्ता और अपनी सुरक्षा के संदर्भ में मानव ने आग के अविष्कार को समर्पित रूप में उपयोग किया। जिसे जिसके बाद मनुष्य नहीं अपने सामाजिक राजनीतिक आयामों को भी नए नए आविष्कारों के रूप में सामाजिक प्रयोगात्मक रचना में बदला जिसमें सबसे प्रथम उपाधि यह थी कि मनुष्य ने समूह में रहकर परिवारिक संरचना का निर्माण किया। साथ ही राजनीतिक रूप से गोप संस्कृति के रूप में नए जीवन को दिशा दी। जिसके फल उपरांत कृषि एवं उद्योग को नई गति देकर मानव ने एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण और नई–नई कृतियों का निर्माण किया जिसमें सभ्यता और संस्कृति दोनों का आचरण मानव के द्वारा लगातार होता रहा। इसी सभ्यता के निर्माण हड़प्पा मोहनजोदड़ो में मूर्ति निर्माण शिलालेख अभिलेख और आवासीय संरचना के रूप में दिखाई पड़ता है। रचनात्मक पृष्ठभूमि में मानव की भूमिका निरंतर बदलते हुए काल खंडों में दिखाई पड़ती है हालांकि भारत के संदर्भ में जहां भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रभाव भारतीय इमारतों और रहन–सहन की प्रक्रिया में पढ़ता है। वही मध्य एशिया से भारत में आई नई सभ्यता व संस्कृति का प्रभाव दिल्ली के बड़ी–बड़ी ऐतिहासिक इमारतों से दिखाई पड़ता है। स्पष्ट है मानव ने लगातार प्रयास प्रगति के आचरण से रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

प्रस्तावना

मानव के विकास में मानव की अभिव्यक्ति उसकी क्षमताओं के अनुसार विकसित हुई है। क्योंकि वर्तमान समाज को अपनी परंपरागत अवधारणा को नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि उभरते हुए आधुनिक काल खंड में मानव ने जहां नियोजित विकास को व्यवस्थित ढंग से परिवर्तित करते हुए सकारात्मक नकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। वही परंपरागत रूप से चली आ रही विकासात्मक पद्धति की तत्कालीन परिस्थितियों में अपनी अलग विशिष्ट पहचान रही है। क्योंकि समाज के निर्माण से लेकर और मानव के विकास के आधुनिक तक मनुष्य ने न केवल समाज को अनेक बार टूटते बिखरते और बढ़ते हुए देखा है। बल्कि समाज में समानता और बराबरी के को कमजोर वर्ग अमीर वर्ग किसान वर्ग मजदूर वर्ग महिलाओं की संवेदनशीलता दलित समुदाय की संवेदनशीलता आदि से लेकर एक राज्य का दूसरे राज्य पर अतिक्रमण उपनिवेश के रूप में संस्कृति का आयाम देखा है। जिसके कारण सैकड़ों वर्षो की निर्माण प्रक्रिया के बाद यह सामाजिक संतोष वर्तमान की परिस्थिति में दिखाई पड़ता है, हालांकि यह रचनात्मक अभिवृत्ति का ही परिणाम है। क्योंकि समय–समय पर भारतीय सामाजिक व्यवस्था और भारत में सामाजिक समस्याओं के बीच प्रयोगात्मक एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण पर बहुत आमूल चूल परिवर्तन हुए हैं जिसमें भारत का विभाजन एक है, विविधता में एकता की संकल्पना भारत को अखंडित रखे हुए हैं जिसके फलस्वरूप भारत वर्तमान की परिस्थितियों में अपनी सांस्कृतिक अवधारणा को बनाए रखने में सफल है समाज का वर्गीकरण परंपरागत और आधुनिक समाज के बाद भी किया जा सकता है। क्योंकि परंपरागत समाज में व्यवहारिक संबंधों के प्रतिमान और मूल्यों में धर्म पर बल दिया जाता रहा है। जिसके वास्तविक पहलुओं को समाज में अनेक बार प्रयोगात्मक रूप से सभ्यता निर्माण में देखा गया है। समाज की प्रगति शीलता और निरंतरता के कारण ही समाज की पृष्ठभूमि मूल्य प्रतिमान मृत्यु परंपराओं पर आधारित हुई इन्हीं को आगे चलकर सामाजिक

श्रेणी क्रम या एक सोशल प्रोटोकॉल के रूप में अभिव्यक्ति दी गई समाज में रूढ़िवादी और सामाजिक संबंधों के पदों की तुलना बदलते हुए कालखंड में विज्ञान और तर्क पर भी निर्भर हुई।

जिसके संदर्भ में धर्म का पतन धर्म के निरपेक्ष और नए सामाजिक धार्मिक नीतियों का उद्भव हुआ जिससे राज्य के आधुनिकता का परिणाम प्राप्त होता है। साथ ही समाज की नई सोच और संस्कारों का निर्माण होता है। जिसके कारण रीति रिवाज सामूहिक ता सामुदायिक स्वामित्व यथास्थिति तथा सरल श्रम विभाजन के साथ–साथ विज्ञान का उदय, तर्क, विवेक प्रबल प्रगति में विश्वास विकास के लिए सरकार और राज्य को आवश्यक मानने के साथ–साथ आर्थिक विकास और जटिल श्रम विभाजन, मनु मनुष्य को प्रकृति और पर्यावरण पर नियंत्रण के साथ–साथ समाज में आलोचनाओं और प्रशंसा में प्रयुक्त प्रकृति पर्यावरण और मानव का एप्लाइड विज्ञान बदलते कालखंड में दिखाई पड़ता है। राज्यों की निर्भरता और संप्रभुता ओं के कारण नए राष्ट्रवाद के रूप में विरोधाभासी या अति आधुनिकता के समाज का निर्माण समानता और संबंध के महत्वपूर्ण गठजोड़ के रूप में माना जाता है।

नये विकास अनुभवों एवं मानव रचनात्मक अभिव्यक्ति का ऐतिहासिक उल्लेख

10000 वर्षों के इतिहास के परीक्षा में पिछले 200 वर्षों में मानव ने असामान्य प्रगति की है और पिछले 50 वर्षों की उपलब्धियां किसी चमत्कार से कम नहीं है 2 वर्षों में उत्पादन इतना बढ़ गया है कि अब विश्व समुदाय 18 सो की आबादी की 12 गुना आबादी का पोषण कर सकता है ग्रामीण आधार वाला कृषि समाज जिसमें 3: से कम लोग कस्बों और शहरों में रहते थे आप उस शहर और उद्योग केंद्रित मानव समाज में विकसित हो रहा है। जिसमें कुल संख्या का 40: से अधिक जनसंख्या शहरी हैं। इस परिवर्तन के साथ कई समस्याएं भी आई जैसी बढ़ते

हुए प्रदूषण और अपराध इत्यादि लेकिन इसके साथ–साथ राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक सुरक्षा शिक्षा और करोड़ों लोगों के लिए आधुनिक सुविधाएं भी आई।

यह उल्लेखनीय है कि यह सामाजिक आंदोलन निरंतर विस्तार और त्वरित गति से चल रहा है यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट में यह टिप्पणी है कि पिछले 50 वर्षों में गरीबी दूर करने में की गई प्रगति 50 वर्षों से कहीं अधिक है और पूरे विश्व में जीवन संभाविता बढ़ रही है शिशु मृत्यु दर घट रही है। संक्रामक रोग घट रहे हैं और अकाल तो समाप्त हो चुके तथा शिक्षा का खूब स्टार हो रहा है 1950 के बाद प्रति व्यक्ति आय 3 गुना हो चुकी है और अप्रत्याशित जनसंख्या वृद्धि के बावजूद विकसित देशों में प्रति व्यक्ति औसत खपत दोगुनी हो चुकी है इन उपलब्धियों से यह संभावना और आशा बनती है कि खुशहाली का यह अद्‌भुत स्तर शीघ्र ही पूरे मानव समाज तक पहुंचेगा।

इन उपलब्धियों के बावजूद 1 अरब से अधिक लोग अभी भी गरीब हैं लेकिन इस बात के साक्ष्य हैं कि अब अल्प विकसित देश पहले विकसित देशों की तुलना में काफी कम समय में अति विकसित देशों के मुकाबले में आ सकते हैं। उससे भी आगे बढ़ सकते हैं, 1780 से प्रारंभ करें तो इंग्लैंड को प्रति व्यक्ति आय दोगुनी करने में 58 वर्ष लगे 1839 से प्रारंभ करके अमेरिका को 47 वर्ष लगे जापान ने 18 सो 80 से शुरू होकर यही कार्य 24 वर्ष में पूरा कर लिया लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इंडोनेशिया ने यह 17 वर्षों में प्राप्त किया दक्षिण कोरिया ने 11 वर्षों में चीन ने मात्र 10 वर्षों में यह उपलब्धि प्राप्त की 1960 से 1990 के बीच क्रिया शक्ति के आधार पर प्रति व्यक्ति जीवन स्तर दक्षिण कोरिया से 12 गुना जापान में 7 गुना और पुर्तगाल में 6 गुना और इंडोनेशिया और थाईलैंड में 5 गुना से अधिक के बराबर बढ़ गया।

शहरीकरण की भूमिका विकास में वित्त और इंटरनेट–

आज तक शहर भौतिक संगठन है, जो लोग गतिविधियां जीवन के क्षेत्र संसाधन और व्यवस्था का ढांचा सभी साधन रूप से एकत्र होते हैं और जटिल ढंग से व्यवहार करते हैं जनसंख्या और शहरी जनसंख्या घनत्व में वृद्धि से पारस्परिक क्रिया और व्यवहार की प्रधानता बढ़ती है। जिसमें नए बाजारों का मार्ग प्रशस्त होता है तथा इस प्रक्रिया में उत्पादन के मशीनीकरण की मांग को पर्याप्त तीव्रता प्रदान होती है।

सामाजिक स्तर पर धन शहरीकरण के माध्यम के रूप में समांतर भूमिका निभाता है तथा आर्थिक गतिविधियों को कई गुना बढ़ा देता है। घन और आधारित अर्थव्यवस्था का स्थापना से लोगों की उत्पादन के एक आवश्यक साधन के रूप में भूमि पर निर्भरता कम करती है और व्यापार को भी वस्तु विनिमय के दोहरे संयुक्त मुक्त करती है धन गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में विनिमय की आवर्ती और गति दोनों को बढ़ाया है और लोगों के लिए यह संभव बनाता है कि वह अपने श्रम को किसी सामान्य मुद्रा में बदल सके जिसे किसी भी वस्तु अथवा सेवा से बदला जा सके धन लोगों को अपनी खपत से अधिक उत्पादन के लिए उत्साहित करता है जिसे उर्जा और रचना तो पैदा होती है। इसे प्रत्येक व्यक्ति के उत्पादन के संरक्षण और संगठन का काम करता है और किसी भी दूरी तक सामान लाने ले जाने को आसान बनाता है जिससे समय और स्थान की सीमा पर जीत पाई जा सकती है और यह नाटकीय ढंग से विनिमय की क्षमता को बढ़ाता है।

इंटरनेट सूचना और ज्ञान के मानसिक स्तर पर इसी प्रकार की भूमिका निभाता है और भूमंडलीकरण के लिए एक माध्य के रूप में काम करता है। आज के युग में इंटरनेट प्रति क्षेत्र व्यापारिक औद्योगिक क्षेत्र शैक्षिक विज्ञान राजनीतिक धार्मिक मनोरंजन इत्यादि में आवर्ती गति और निपुणता तथा कुशलता को बढ़ाकर सूचना के आदान–प्रदान को तीव्र कर रहा है। इंटरनेट

विश्व में कहीं भी उपलब्ध जानकारी तक तुरंत पहुंच बनाने में सक्षम बनाकर समय और स्थान की सीमाओं पर काबू पा रहा है। यह लोगों संगठनों तथा ज्ञान के क्षेत्र के बीच व्यवहारिक आदान–प्रदान की संख्या अंतर्गत आ और व्यवहारों की जटिलता को सरल एवं संभव बनाता है। वर्तमान में उपस्थित सभी सामाजिक संगठनों को अधिकाधिक संपर्क में लाने और समाज की अधिकतम ऊर्जा के उत्सर्जन के लिए इंटरनेट एक संगठित माध्यम के रूप में कार्य कर रहा है और इस प्रकार सामाजिक उत्पादन और विकास के आशातीत स्तरों को प्राप्त कर रहा है

विकास की बाधाएं और अवरोध

क) प्रत्यक्षपरक अवरोध और स्पष्ट रूप से अंतिम सिरा

ख) पुराना प्रचलित दृष्टिकोण

ग) काल दोष कालातीत व्यवहार

शोध पद्धति–

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने में ऐतिहासिक अनुसंधान माध्यम को चुना गया है। जिसके माध्यम से विगत वर्षों में आधुनिकता के नए परिवेश में मानवीय रचनात्मक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन सुनिश्चित हो सका। प्रस्तुत शोध प्रबंध की ऐतिहासिक अनुसंधान आत्मक विधि को व्याख्यात्मक वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष–

शोध प्रबंध में मानव के विकास और रचनात्मक अभिव्यक्ति से स्पष्ट है कि मानव ने आधुनिकता के नए आयामों में अपनी विकास की नई शैली को पैदा किया है। जिसके फलस्वरूप वर्तमान की सभ्यता व संस्कृति आधुनिकता के नए आयामों को व्यक्त कर रही है, किंतु मानव

जीवन की पद्धति में सदैव से ही भारतीय संस्कृति के विकास और उत्प्रेरक गुणों का प्रभाव बना रहा है। जिसे वर्तमान की आधुनिक इमारतों में रह रहे लोगों की जीवन पद्धति के रूप में देखा जा सकता है और समय–समय पर त्योहार एवं परिवारिक उत्सव में उन संस्कृतियों को दोहराया जाता है। अतः स्पष्ट है मानव की रचनात्मक प्रारंभिक शैलियां आज भी किसी ना किसी रूप में मानव के जीवन का अंग बनी हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- श्रीवास्तव सुधारानी वं रागिनी श्रीवास्तव, (2001), मानव अधिकार और महिला उत्पीड़न, कॉमनवैल्थ, दिल्ली।
- प्रो0 मान चन्द्र खडैला, (2008), महिला और बदलता सामाजिक परिवेश, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर
- राजकिशोर (सम्पादक), (1999) 'स्त्री परंपरा और आधुनिकता', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- करात, वृंदा (2006), जीना है तो लड़ना होगा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कुमारी, रमेश (2007), संस्कृति साहित्य और स्त्री (एक आलोचनात्मक विमर्श), अकादमिक प्रतिभा, दिल्ली।
- सिंह, राजबाला, मधुबाला सिंह, (2006) 'भारत में महिलाएं', आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर।
- शुक्ल, डॉ0 प्रवीण, (2007), महिला सशक्तिकरण : बाधाएं एवं संकल्प, आर0के0 पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।

- महिलाएं तथा शासनः राज्य की पुनर्कल्पना, एक रपट, सोसायटी फॉर डेवलपमेंट आल्टरनेट्विस फॉर विमेन, नई दिल्ली, 2002।
- भारत सरकार, भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कियान्वयन मंत्रालय के केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की समय के उपयोग संबंधी सर्वेक्षण की रिपोर्ट, नई दिल्ली, 2002।
- संयुक्त राष्ट्र संघ, 'मानवाधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय विधेयक', संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र, नई दिल्ली।
- कुमार, राधा (2004), स्त्री संघर्ष का इतिहास, 1800–1990, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कपूर, डॉ0 एस0के0 (2005) मानव अधिकार, सैन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद।
- भटनागर, गौरव विवेक, 2015, ए ट्रैकर टू कर्ब सेक्स डिटरमिनेशन ,द हिन्दू, चेन्नई।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/20

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 सुमित कुमार

For publication of research paper title

मानव सभ्यता की रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com